सातवाँ संस्करण, १९६३

PK
2098
.P32
P28

मूल्य छः रुपये

PL 480

प्रकाशक
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
दिल्ली

मुद्रक
श्री महावीर जैन
लोकभारती मुद्रणालय, इलाहाबाद

पल्लव

श्री सुमित्रानंदन पंत

विश्व छवि

मुसकुराते गुलाब के फूल !
कहाँ पाया मेरा बचपन ?–
सुभग, मेरा भोला बचपन ?
ढुलकते हिमजल - से लोचन,
अधखिला तन, अखिला मन;
धूलि में भरा स्वभाव दुकूल,
मृदुल छवि, पृथुल सरलपन;
स्व-विस्मित-से गुलाब के फूल,
तुम्हीं सा था मेरा बचपन !

रँगीले मृदु गुलाब के फूल !
कहाँ पाया मेरा यौवन ?–
प्राण, मेरा प्यारा यौवन ?
रूप का खिलता हुआ उभार,
मधुर मधु का व्यापार;
चुभे उर में सौ सौ मृदु शूल,
खुले उत्सुक दृग द्वार;
हृदय ही - से गुलाब के फूल,
तुम्हीं सा है मेरा यौवन !

सहज प्रमुदित गुलाब के फूल !
कहाँ पाया ऐसा जीवन ? –
सुहृद, ऐसा स्वर्गिक जीवन !

कँटीली जटिल डाल में वास,
अधर आँखों में हास;
भूलना भौंकों के अनुकूल,
हृदय में दिव्य विकास;
सजग कवि-से गुलाब के फूल,
तुम्हीं सा हो मेरा जीवन !

मलिन, मुरझे गुलाब के फूल !
सुकृति हो है, हाँ, आश्वासन,
सुमन, बस अंतिम आश्वासन !
किया तुमने सुरभित उद्यान,
दिया उर से मधुदान;
मिला है उन्हें आज वह मूल,
लिया जिससे आधान;
स्वप्न ही-से गुलाब के फूल,
नव्य जीवन है आश्वासन !

धूलि धूसर गुलाब के फूल !
यही है पीला परिवर्तन,–
प्रतनु, यह पार्थिव परिवर्तन !
नवल कलियों में वह मुसकान
खिलेगी फिर अनजान;
सभी दुहराएँगी यह गान,–
जन्म का है अवसान;
विश्व छवि-से गुलाब के फूल !
करुण है पर यह परिवर्तन !

(अप्रेल, १९२२)